03RD SUNDAY ORDINARY – C (27-01-2019)

Nehemiah 8 2-4 5-6 8-10, Psalm 19 8-10, 15 1 Corinthians 12 12-30, Luke 1 1-4, 4 14-21

आज का सुसमाचार में, नाज़रेथ के सभागृह में, प्रभु येसू, अपने वक्तव्य के द्वारा, आने वाले मुक्तिदाता के पुराने व्यवस्थान की भविष्यवाणी, पूरी होने का दावा करते हैं। प्रभु येसू ही वह मुक्तिदाता है; जिसके विषय में, नबी इसायस ने लगभग सात दशक पूर्व में ही, भविष्यवाणी के द्वारा घोषित किया था। **आज के पाठ हमें प्रभु के वचन के प्रभाव के बारे में शिक्षा देते हैं।** प्रभु का वचन मनुष्य को संपूर्ण रुप से उद्धार करता है!

प्रभु के वचन के पाठन से, प्रभु ही हमारे बीच उपस्थित होते हैं, हमारी आत्माओं में, मन तथा हृदयों में उसका प्रभाव दिखने को मिलता है। प्रभु का वचन मनुष्य को पाप के बंधनों से मुक्त करता है तथा जीवन में सुधार करने के लिए अन्दर से प्रेरणा देता है। इसका सबसे उत्तम उदाहरण संत आगस्तीन है, जिसने प्रभु की प्रेरणा से धर्मग्रन्थ को खोला और उसे संत पौलुस का **रोमियों के लिखे पत्र का अध्याय 13:11–14** को पढ़ा। प्रभु का यह वचन उन्हें अपने पाप से विमुख होने का मुख्य कारण बना। **"आप लोग समय पहचानते हैं। आप लोग जानते हैं कि नींद से जागने की घड़ी आ गयी है। जिस समय हमने विश्वास किया था, उस समय की अपेक्षा अब हमारी मुक्ति अधिक निकट है। रात प्रायः बीत चुकी है, दिन निकलने को है, इसलिए हम, अन्धकार के कर्मों को त्याग कर, ज्योति के शस्त्र धारण कर लें। हम दिन के योग्य सदाचरण करें। हम रंगरलियों और नशेबाजी, व्यभिचार और भोगविलास, झगड़े और ईर्ष्या से दूर रहें। आप लोग प्रभु ईसा मसीह को धारण करें और शरीर की वासनाएँ तृप्त करने का विचार छोड़ दें।"**

आज का पहला पाठ जो नेहेमिया के ग्रन्थ से लिया गया है, तथा संत लूकस के सुसमाचार का अंश, यह दोनों, लोगों के समक्ष, सार्वजनिक जगह में, प्रार्थनामय माहौल में पढ़ा गया है। इन पाठों का प्रभाव श्रोताओं के ऊपर होता है तथा वे नये दृष्टिकोण से, जीवन में नयी शुरुआत करते हैं।

पहले पाठ पढ़ने के बाद, खंडित तथा नष्ट हुआ येरुसलेम का मंदिर तथा नगर का पुनःनिर्माण की शुरुआत की जाती है। एज़रा, सार्वजनिक धर्मक्रिया के द्वारा, ईश्वर के साथ व्यवस्थान का नवीनीकरण करता है। इसके पश्चात् ईश्वर के संहिता का ग्रंथ पढ़कर सुनाता है, तत्पश्चात् उसका अनुवाद करके अर्थ समझाता है, जिससे लोग पाठ समझ सकें।

प्रभु येसू ने कहा कि, उनको **पिता ईश्वर ने मिशन कार्य के द्वारा अनेक कर्त्तव्यों को करने के लिए भेजा है। 1) दरिद्रों को सुसमाचार सुनाना**–– प्रभु येसू का मिशन कार्य संपन्न होने के लिए, उनको किसी प्रकार का भी राजनीतिक अधिकार नहीं मिला था, गरीब जनता; जो कि बहुसंख्यक थी, उनके बीच में ही वे प्रसिद्ध हो गये। संख्याबल में उनकी प्रसिद्धि से, यहूदि धर्म के अधिकारी अपने को खतरा समझ बैठते हैं तथा उनको क्रूस में चढ़ाने के लिए लोगों को बहकाते हुए उन्हें क्रूस देने की मांग कर बैठते हैं।

2) बंदियों को मुक्ति का और अंधों को दृष्टिदान का संदेश पददलितों को स्वतंत्रता प्रदान करने का मिशन कार्य–– प्रभु येसू लोगों को नरकदूतों से तथा उनके प्रभाव से मुक्त करते हैं। बंदी, वह लोग होते हैं जो कई सालों से शैतान के मायाजाल से तथा उसके प्रभाव के कारण अपनी बुरी आदतों में बंधे गये हैं। प्रभु येसू; हम मनुष्यों को, ईश्वर के पुत्र–पुत्रियां होने का गौरव तथा स्वतंत्रता प्रदान करते हैं। प्रभु येसू **मत्ती** के सुसमाचार में **11:28** में कहते हैं–**"थके–माँदे और बोझ से दबे हुए लोगो! तुम सबके सब मेरे पास आओ। मैं तुम्हें विश्राम दूँगा।"**

3) प्रभु के अनुग्रह का वर्ष घोषित करने का मिशन कार्य– यह पुराने व्यवस्थान के जुबली वर्ष की ओर इंगित करता है। नबी इसायस के भविष्यवाणी के अनुसार, मुक्तिदाता के मिशन कार्य के समय, इस्राएल को लंबे अवधि से प्रतीक्षीत मुक्तिदात, उन्हें उनके पापों के बंधनों से मुक्त करेगा तथा उन्हें फिर से ईश्वर की परमप्रिय प्रजा बनायेगा।

प्रभु येसू , नबी इसायस के ग्रंथ के अंश को पढ़ने के बाद, यह दावा करते हैं कि, उनके सुनने से, नबी द्वारा की गई भविष्यवाणी पूरी हो गयी है, **अर्थात् प्रतिज्ञात मसीह तथा उद्धारकर्त्ता उनके बीच में प्रकट हुआ है।** प्रभु येसू अपने मिशन कार्य करने का अधिकार तथा उसका स्रोत, ईश्वर को ही मानते हैं। इसी अधिकार के साथ, वे लोगों को उनके बंधनों से मुक्त करते हैं। इसलिए शरीरिक चंगाई के पहले, वे बीमारों को आध्यात्मिक चंगाई और पाप क्षमा करते हैं। अर्थात् इस लोक के प्रशिक्षित वैद्य शारीरिक चंगाई मात्र दे सकते हैं लेकिन प्रभु येसू शरीरिक चंगाई के साथ–साथ व्यक्ति को, संपूर्ण रुप से चंगा करके उस व्यक्ति का पुनःनिर्माण करते हैं। यह कार्य केवल ईश्वर का भेजा हुआ, मसीह मात्र ही कर सकता है।

प्रभु के मिशन कार्य यह हैं कि, वे सबको उनके पापों से मुक्त करके ईश्वर के साथ फिर से जोड़ना चाहते हैं; लेकिन, वे लोगों के इच्छा के विरुद्ध उनका उद्धार नहीं करना चाहते हैं। इसलिए केवल उन्हीं का उद्धार होता है, जो प्रभु के वचन को सुनते हैं, उनमें विश्वास करते हैं तथा उद्धार होना चाहते हैं, उद्धार होने की अन्य कोई संभावना नहीं है।

इब्रानियों के लिखे पत्र में संत पौलुस ईश्वर के वचन के बारे में बहुत अधिक गहराई से समझाते हैं। **"ईश्वर का**

Scanned by CamScanner

वचन जीवन्त, सशक्त और किसी भी दुधारी तलवार से तेज है। वह हमारी आत्मा के अन्तरतम तक पहुँचता और हमारे मन के भावों तथा विचारों को प्रकट कर देता ह। उसकी आँखों के सामने सब कुछ निरावरण और खुला है। हमें उस लेखा देना पड़ेगा'' (इब्रानियों 4:12–13)। इसका सर्वोत्तम उदाहरण है, संत फ्रान्सीस जेवियर, जो कि एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति थे और विश्वविद्यालय में बहुत अधिक प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद वे एक बड़े प्रोफेसर बनकर नाम कमाना चाहते थे, लेकिन; जब लोयोला के संत इग्नासियुस ने उनके सामने प्रभु का वचन पढ़ा, उनके अन्दर आन्तरिक बदलाव आये और वे भारत, श्रीलंका, चीन और जापान में प्रभु के सुसमाचार को फैलाने के मिशन कार्य में लग गये। उन्होंने मिशन कार्य में, संत पौलुस के बाद सबसे अधिक सफलता प्राप्त की और अधिक से अधिक लोगों को प्रभु येसु के पास ले आये। संत इग्नासियुस ने उनके सामने पढा था — **''मनुष्य को इससे क्या लाभ, यदि वह सारा संसार तो प्राप्त कर ले, लेकिन अपना जीवन ही गँवा दें? अपने जीवन के बदले मनुष्य दे ही क्या सकता है?''** (मारकुस 8:36–37)।

ईश्वर का वचन हम मनुष्यों को शुद्ध करता है और **हमें ईश्वर के साथ जुड़े रहकर जीवन प्राप्त** करने के लिए **प्रेरित करता है**। प्रभु येसु ने अपने शिष्यों से कहा–– **''मैंने तुम लोगों को जो शिक्षा दी है, उसके कारण तुम शुद्ध हो गये हो।** तुम मुझ में रहो और मैं तुम में रहूँगा। जिस तरह दाखलता में रहे बिना डाली स्वयं नहीं फल सकती, उसी तरह मुझ में रहे बिना तुम भी नहीं फल सकते।'' (योहन 15:3–4)।

प्रभु का वचन, जीवन सुधारने के लिए और प्राशिक्षण प्राप्त करने के लिए उपयोगी है। ''पूरा धर्मग्रन्थ ईश्वर की प्रेरणा से लिखा गया है। वह शिक्षा देने के लिए, भ्रान्त धारणाओं का खण्डन करने के लिए, जीवन के सुधार के लिए और सदाचारण का प्रशिक्षण देने के लिए उपयोगी है, जिससे ईश्वर– भक्त सुयोग्य और हर प्रकार के सत्कार्य के लिए उपयुक्त बन जाये'' (2 तिमथी 3:16–17)।

ईश्वर का वचन हमें, अच्छे उदाहरण को अपनाने के लिए प्रेरित करता है। पृथ्वी में रहते हुए अनन्त जीवन के लिए तैयारी करने के लिए संतों का उत्तम उदाहरण देकर प्रेरित करता है। मनुष्य अक्सर प्रसिद्ध लोगों को अनुकरण करते हुए दिखाई देते हैं। यदि हम धर्मग्रंथ से प्यार करते हैं, हम संत पौलुस के उदाहरण को, बार–बार याद करते हुए अपने जीवन में उसे लागू करते हैं। **संत पौलुस ने अपने अंतिम दिनों में यह लिखा–– ''मैं प्रभु को अर्पित किया जा रहा हूँ। मेरे चले जाने का समय आ गया है। मैं अच्छी लड़ाई लड़ चुका हूँ, अपनी दौड़ पूरी कर चुका हूँ** और पूर्ण रुप से ईमानदार रहा हूँ। अब मेरे लिए धार्मिकता का वह मुकुट तैयार है, जिसे न्यायी विचारपति प्रभु मुझे उस दिन प्रदान करेंगे– मुझ को ही नहीं, बल्कि उन सबको, जिन्होंने प्रेम के साथ उनके प्रकट होने के दिन की प्रतीक्षा की है (2 तिमथी 4:6–8)।

ईश्वर का वचन हमें अनन्त जीवन प्राप्त करने का सच्चा मार्ग बताता है। जब थॉमस ने कहा– ''प्रभु! हम यह भी नहीं जानते कि आप कहाँ जा रहे हैं, तो वहाँ का मार्ग कैसे जान सकते हैं?'' ईसा ने उस से कहा– **''मार्ग, सत्य और जीवन मैं हूँ। मुझ से हाक कर गये बिना कोई पिता के पास नहीं आ सकता''** (योहन 14:5–6)।

प्रभु येसु ने कहा–– **''जो मेरी ये बातें सुनता और उन पर चलता है, वह उस समझदार मनुष्य के सदृश है,** जिसने चट्टान पर अपना घर पर अपना घर बनवाया था। पानी बरसा, नदियों में बाढ़ आयी, आँधियाँ चलीं और उस घरसे टकरायीं तब भी वह घर नहीं ढ़हा; क्योंकि उसकी नींव चट्टान पर डाली गयी थी'' (मत्ती 7:24–25)। अर्थात् हमें इस संसार में रहते हुए, सांसारिकता में खो जाने के विरुद्ध, प्रभु का वचन हमें, समय–असमय पर सतर्क करता रहता है।

संत याकूब (St. James) अपने पत्र के द्वारा हमें याद दिलाते हैं–– **''आप लोग हर प्रकार की मलिनता और बुराई को दूर कर नम्रतापूर्वक ईश्वर का वचन ग्रहण करें,** जो आप में रोपा गया है और **आपकी आत्माओं का उद्धार करने में समर्थ** है। **आप लोग अपने को धोखा नहीं दें। वचन के श्रोता ही नहीं, बल्क उसके पालनकर्त्ता भी बनें।** जो व्यक्ति वचन सुनता है किन्तु उसके अनुसार आचरण नहीं करता, वह उस मनुष्य के सदृश है, जो दर्पण में अपना चेहरा देखता है। वह अपने जो देख कर चला जाता ह और उसे याद नहीं रहता कि उसका अपना स्वरुप कैसा है (याकूब 1:21–24)।

.....

Scanned by CamScanner